30वीं वर्षगांठ 1985 2015

नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर

खण्ड–2 क्रमांक–3 जुलाई–सितम्बर 2015

विषय सूची

- निदेशक की कलम से..... 1
- नीबूवर्गीय फल क्षेत्र से..... 1
- संस्थान से 1
- सुझाव /प्रतिसूचना 4

निदेशक की कलम से.....

प्रिय पाठकों,

जुलाई 28, 2015 को भा. कृ. अनु. प.– के. नी. फ. अनु. संस्थान, नागपुर, देश के नीबूवर्गीय उद्योग की सेवा में अपने 30 वर्ष पूरे कर रहा है। क्षेत्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान स्टेशन की आधारशिला भारत के तत्कालीन रक्षा मंत्री स्वर्गीय माननीय श्री नरसिम्हा राव द्वारा 28 जुलाई, 1985 को रखी गई थी। स्थापना के 30वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर नीबूवर्गीय फलों के ग्रीनींग एवं विषाणु रोग पर एक दिवसीय ब्रेन स्टॉर्मिंग परिचर्चा का आयोजन संस्थान में किया गया। यह आयोजन अत्यंत सफल रहा तथा इसमें 100 से अधिक जाने माने पादप रोग विशेषज्ञ, विषाणु शास्त्री, वैज्ञानिक, राज्य सरकार विभागों के अधिकारी, सरकारी संस्थाओं एवं विद्यार्थियों नें भाग लिया। विषाणु एवं ग्रीनींग जैसे सर्वांगी रोगों के क्षेत्र में उपचार की तुलना में सुरक्षा ही बेहतर उपाय है। इस रोग के प्रसार को रोकने हेतु रोग–मुक्त पौध सामग्री का उत्पादन एवं आपूर्ति, रोगवाहक कीटों का प्रबंधन एवं स्वच्छता के उपायों द्वारा ही प्रभावकारी फल प्राप्त किया जा सकता है। दीर्धकालीक नीतियों में रोग प्रतिरोधी मूलवृंतों एवं कलमों के विकास को सम्मिलित किया जा सकता है। वर्ष 2014 से संस्थान द्वारा नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र का हिन्दी में प्रकाशन प्रारंभ किया गया तथा इसके विभिन्न अंकों को राजभाषा पखवाड़ा समारोह सितंबर, 2015 के अंतर्गत विमोचित किया गया। संस्थान वर्ष 2013–14 से वार्षिक प्रतिवेदन के हिन्दी प्रारूप को भी प्रकाशित कर रहा है। जन जातीय उप योजना (टी.एस.पी.) कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रतापगढ़, राजस्थान में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 100 के लगभग जनजातीय कृषकों को प्रशिक्षित किया गया तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रतापगढ़ में नागपुरी संतरे की रोपाई, वहाँ के प्रखण्ड में की गई।

नीबूवर्गीय फल क्षेत्र से

नीबूवर्गीय फलों के कई प्रसंस्कृत उत्पादों की किस्में बाजार में उपलब्ध हैं। यह वृहद पैमाने पर हो रहा व्यवसाय तथा साथ–साथ नये उत्पादों की होड़ को प्रदर्शित करता है। बिना किसी विशेष उत्पाद के समर्थन की इच्छा तथा केवल जानकारी प्रदान करने की भावना से कुछ उत्पादों तथा उत्पादकों को यहाँ दर्शाया जा रहा है। संतरा स्क्वैश का विपणन एग्रो फूड, प्रालि.,किसान, मेसर्स फूडराईट, हल्दीराम फूड एवं कई अन्य कम्पनियों द्वारा किया जा रहा है इसी प्रकार नीबू स्क्वैश का विपणन किसान एवं हल्दीराम फुड द्वारा किया जा रहा है। नीबू, बारली (जौ) जल का विपणन मेसर्स फूडराईट एवं मालास फूड द्वारा किया जा रहा है। साथ ही किसान द्वारा नीबू रस पेय भी उपलब्ध है। शुद्ध संतरा रस के क्षेत्र में बी.नेच्युरल, डाबर (रीयल उत्पाद) एवं सनकिस्ट बाजार में उपलब्ध है। 'सच' एवं 'मोसंबी डिलाइट' जैसे उत्पाद, ब्रैण्ड श्रेयबर डाइनेमिक्स डेयरी लिमिटेड, बारामती, पुना द्वारा निर्मित किये जा रहे हैं जो पेय अथवा तुरन्त पीने योग्य के श्रेणी में आते है जिसमें 20–26 प्रतिशत रस की मात्रा उपलब्ध रहती है। सच एवं मोसंबी डेलाइट का टेट्रा पैक, पेप्सीको इंडिया होल्डिंग प्रा. लि. द्वारा विपणन किया जा रहा है। 100 प्रतिशत संतरा रस, के डिब्बा बंद उत्पाद हेतु पेप्सी का ट्रोपीकाना एक जाना माना बैण्ड है। डाबर द्वारा रीयल ब्राण्ड के नाम से संतरा व गाजर रस के मिश्रण का विपणन किया जा रहा है। तुरन्त पीने योग्य पेय जैसे उत्पाद मिनट मैड नीबू, फ्रेश एवं नीबूज ब्रैण्ड कोका कोला इंडिया एवं पेप्सीको इंडिया होल्डिंग द्वारा उपलब्ध किये गये है। भारत में आयातित रूचिकर कार्बोनेटेड पेय पदार्थ जैसे रोनपेलेक्रिनो–एरासियाटा रोजा (12 प्रतिशत लाल संतरा रस) एवं लिमोनाटा (16 प्रतिशत नीबू रस) उपलब्ध हैं। इन उत्पादों एवं कम्पनियों के अलावा नीबूवर्गीय पेय पदार्थों के क्षेत्र में कई स्थानीय एवं क्षेत्रीय उत्पादक भी हैं। यह दृश्य दर्शाता है कि प्रचूर मात्रा में नीबूवर्गीय फलों को देश में प्रसंस्कृत किया जा रहा है।

संस्थान से

अनुसंधान उपलब्धियाँ

एन.आर.सी.सी. बीज रहित नागपुरी संतरा-4 : एक नई बीज रहित संतरे की किस्म: विश्व बाजार में निर्यात हेतु आवश्यक सुधारित फल गुणवत्ता के साथ उत्पादन में वृद्धि के लिए भा. कृ. अनु. प.– केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान (के.नी.फ.अनु.सं.), नागपुर ने एक बीज रहित संतरे की किस्म की पहचान अत्याधिक उत्पादन हेतु की है। इस किस्म का नाम नागपुरी संतरा बीज रहित–4 रखा गया है। नागपुरी संतरे की बहु बीजता (13–15 बीज/ फल) को ग्राहकों एवं प्रसंस्करणकर्ताओं द्वारा पसंद नहीं किया जाता है। बीज रहित संतरा उत्पादक अन्य

एन.आर.सी.सी. बीजरहीत नागपुरी संतरा -4 : 13 वर्ष पुराना वृक्ष एवं फल

देशों में इजराइल एवं स्पेन है, जो क्लिमेंटाईन उगाते हैं तथा जापान एवं चीन सतसुमा संतरा उगाते हैं। हमारी इस नई किस्म को घरेलू बाजार एवं निर्यात में प्राथमिकता मिलेगी। इस नये किस्म की उत्पादन क्षमता 27.15 टन / हेक्टेयर (98 कि. ग्राम फल प्रति वृक्ष), वृक्ष के 10–15 वर्ष उम्र तक है। के.नी.फ.अनु.सं. के 9 वर्षों के आकड़ों के अनुसार इस फल में केवल 2.57 बीज प्रति फल तक कम बीज पाये गये है जबकि नागपुरी संतरे में 12.68 बीज प्रति फल तक पाये जाते हैं। यह प्राकृतिक उत्परिवर्तन पर आधारित क्लोनल चयन है। इसका चयन, आकर्षक बड़ा फल आकार, अधिक उत्पादन (679 फल/वृक्ष), मध्यम ऊंचाई, सीधा वृक्ष विकास, पकने पर गहरे संतरी रंग के फल, मीठे, अच्छी खुशबू एवं रसदार, फल भार (145.9 ग्राम), फल आकार (61.61 X 70.23 मि. मी.), छिलका मोटाई (3.24 मि. मी.), प्रतिफल फॉकों की संख्या (10.02), कुल घुलनशील ठोस (10.44), अम्लीयता (0.72 प्रतिशत) तथा रस की मात्रा (46.06 प्रतिशत)। जबकि इसकी तुलना में अधिक बीज युक्त नागपुरी संतरा 520 फल/वृक्ष/वर्ष तक प्राप्त किया जा सकता है जिसमें बीजों की संख्या 12.68/फल तक पाई जाती है। इस वर्ष इस नये बीज रहित किस्म के लगभग 2000 पौधे तैयार किये गये, जिन्हें प्रगतिशील किसानों, नर्सरीधारकों, सरकारी विभाग एवं देश भर के कृ. वि. के. में वितरित किया गया। के.नी.फ.अनु.सं., नागपुर में अक्टूबर, 2014 के माह में आयोजित संतरे पर राष्ट्रीय किसान मेला के अंतर्गत इस नई किस्म के पौधों को उपमहानिदेशक (बागवानी), भा.कृ.अनु.प., के द्वारा वितरित किया गया था। इस बीज रहित किस्म को प्रदर्शन हेतु महाराष्ट्र के वरूड एवं पतरवाड़ा के किसानों के खेतों मे 4 स्थानों पर लगाया गया है।

संस्थानीय गतिविधियाँ/आयोजित कार्यक्रम

संतरे के विषाणु एवं ग्रीनींग रोगों पर ब्रेन स्टार्मिगं परिचर्चा: चुनौतियाँ एवं भविष्योन्मुख दिशा

संस्थान के 30वें वर्षगांठ के अवसर पर 28 जुलाई, 2015 को के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर में भा.कृ.अनु.प.–के.नी.फ.अनु.सं. एवं नीबूवर्गीय फलों के लिए तकनीकी मिशन (टी. एम. सी.) द्वारा नीबूवर्गीय फलों के ग्रीनींग एवं विषाणु रोगों के प्रादुर्भाव से उत्पन्न चुनौतियों हेतु नीतियों पर चर्चा तथा आगामी समय की रूप रेखा हेतु परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि डॉ. सी. डी. माई, पूर्व अध्यक्ष कृ. वै. च. मं., नई दिल्ली, द्वारा इस कार्यक्रम का उद्घाटन 28 जुलाई, 2015 को किया गया। इस अवसर पर डॉ. पाल खुराना, पूर्व कुलपति, आर. डी. वी. सी. जबलपुर एवं पूर्व निदेशक, सी. पी. आर. आई., शिमला, डॉ. वाई. एस. अहलावत, ख्याति प्राप्त पूर्व वैज्ञानिक, भा. कृ. अनु. सं., नई दिल्ली तथा डॉ. पी. के. चक्रवर्ती, सहायक महानिदेशक (पादप सुरक्षा), भा. कृ. अनु. प., माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित थे। भारत के पूर्व राष्ट्रपति, भारत रत्न डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम को श्रद्धांजली प्रस्तुत करने हेतु दो मिनट के मौन के पश्चात इस कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, के. नी. फ. अनु. सं. द्वारा अतिथियों एवं प्रतिनिधियों के स्वागत उपरान्त के. नी. फ. अनु. सं. के विगत 30 वर्षों की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। डॉ. सी. डी. माई द्वारा यह सुझाव प्रस्तुत किया गया कि जंगली संतरा प्रजातियों अथवा कृष्य प्रजातियों में से उपयुक्त प्रतिरोधी जीन के उपयोग द्वारा आनुवंशिक तौर पर विकसित संतरे का उपयोग ग्रीनींग रोग के प्रति प्रतिरोधिता के लिए किया जा सकता है। यह विधि अन्य कलम किस्मों एवं मूलवृन्तों के लिए भी किया जा सकता है। इन्होनें कहा कि विषाणुओं एवं विषाणुओं जैसे तथा ग्रीनींग रोग (हुआंगलांगबिंग रोग) पर बचाव ही उचित नीति है। डॉ. पी. के. चौधरी नें रोगजनकों के नैदानिकी हेतु मानव संसाान विकास तथा कुशलता विकास एवं देश में इसके लिए अच्छी सुविधाएँ उपलब्ध करवाने पर बल दिया। डॉ. वाई. एस.

दीप प्रज्जवलन करते हुए सम्माननीय अतिथि।

के.नी.फ.अनु.सं. के प्रकाशनों को विमोचित करते सम्माननीय अतिथि।

अहलावत द्वारा '' भारत में नीबूवर्गीय फलों में विषाणुओं पर अनुसंधानः महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ'' वक्तव्य डॉ. एस. पी. रायचौधुरी के सम्मान में प्रस्तुत किया गया। डॉ. राय चौधरी को इनके द्वारा सन् 1950 से 1980 तक किये गये अप्रतीम शोध कार्यो एवं योगदान के लिए भारतीय पादप विषाणु शास्त्र का पिता कहा जाता है। डॉ. एस. पी. कपूर जिन्होंनें नीबूवर्गीय फल विषाणु शास्त्र एवं ग्रीनींग रोग के क्षेत्र में अत्याधिक योगदान किया है, को भी याद किया गया। चर्चा के अतंर्गत गीनींग एवं नीबूवर्गीय मोजाइक बदना विषाणु (सी.एम.बी.वी.) हेतु सरलता से उपयोग किये जाने योग्य किट जिसमें पी. सी. आर. एवं आर.टी.– पी. सी. आर. जैसे महंगे मशीनों का उपयोग नहीं किया जाता है को भी रिपोर्ट किया गया।

कार्यक्रम में 12 आमंत्रित वक्ताओं ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, के. नी. फ. अनु. सं. ने विषाणु एवं ग्रीनींग रोगों के प्रसार को रोकने के लिए वास्तविक एवं सही ढंग से प्रयास किये जाने पर बल दिया। आर. एन. ए. आई. तकनीकी एवं विषाणु प्रतिरोधिता बडवुड प्रमाणीकरण कार्यक्रम एवं वृहद क्षेत्र कीट कारक प्रबंधन तथा ग्रीनींग के लिए मध्यम विषाणु प्रकारों के द्वारा क्रास सुरक्षा पर और अनुसंधान करना आवश्यक है ऐसा मत भी इन्होनें रखा।

एक सोवनीयर, ग्रीनींग नैदानिकी पर तकनीकी बुलेटिन तथा नीबूवर्गीय फलों के लिए सुधारित पौधशाला विधियों पर प्रसार बुलेटिन का विमोचन इस अवसर पर किया गया। विशेषज्ञों, युवा अनुसंधानकर्ताओं, संगरोधन (क्वाटेंटाईन) एवं

ट्राईकोडर्मा जैविक प्रबंधन प्रयोगशाला का उद्घाटन

व्यक्तिगत संस्थाओं के सहभागियों सहित 116 से अधिक प्रतिनिधियों नें इसमें भाग लिया।

इस अवसर पर एक जैव–नियंत्रण प्रयोगशाला जिसमें टाल्क आधारित ट्राइकोडर्मा उत्पाद का निर्माण किया जाता है, का उद्घाटन किया गया।

स्थापना दिवस समारोह : संस्थान ने अपना तथा भा. कृ. अनु. प., नई दिल्ली का स्थापना दिवस 28 जुलाई को मनाया। निबंध लेखन, पहेलियाँ एवं खेल प्रतिस्पर्धा जैसे कई कार्यक्रम इस सप्ताह में आयोजित किये गये जिसमें संस्थान के सभी कर्मचारियों नें भाग लिया। पुरस्कारों का वितरण ब्रेन स्टार्मिंग परिचर्चा 28 जुलाई,

2015 के आयोजन के दौरान डॉ. सी. डीमाई, पूर्व अध्यक्ष, कृ. वै. च. मं., नई दिल्ली के कर कमलो द्वारा किया गया।

सी.सी.आर.आई. कर्मचारी संगीत कुर्सी स्पर्धा में भाग लेते हुए

डॉ. सी. डी. माई पुरस्कार वितरण करते हुए

हिन्दी पखवाड़ा: संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा समारोह 14–28 सिंतबर, 2015 तक मनाया गया, जिसमें निबंध लेखन, पहेलियाँ, अनुवाद, स्वस्फूर्द वक्तव्य जैसी प्रतियोगितायें आयोजित की गई। इसमें वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इसका समापन समारोह 29 सितंबर, 2015 को आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में डॉ. बी. एस. ढ़िल्लन, पूर्व अधिष्ठता, स्नातकोत्तर शिक्षा, पंजाब कृषि विश्व विद्यालय, लुधियाना तथा डॉ. लोकेन्द्र सिंह, सी. आई एम. एस., नागपुर उपस्थित रहे तथा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये । इस अवसर पर 'संतरा संवाद' व नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र का विमोचन भी किया गया। वर्ष 2014–15 के अंतर्गत हिन्दी में की गई विभिन्न गतिविधियों की भूमिका को डॉ. आई. पी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) ने प्रस्तुत किया गया। निदेशक, डॉ. एम. एस. लदानिया ने संस्थान में हिन्दी में किये जा रहे कार्यो पर संतुष्टि जताई। डॉ. लोकेन्द्र सिंह नें श्रोताओं को अपने काव्य पाठ द्वारा मग्न रखा। डॉ. एस. एस. मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी) नें इस अवसर पर सबको धन्यवाद ज्ञापित किया।

26 सितंबर, 2015 को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कर्मचारियों द्वारा हिन्दी में कार्यालयीन कार्य को प्रोत्साहन देने हेतु किया गया। इस अवसर पर डॉ. उमेश सिंह, प्राध्यापक, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं श्री सोमपाल सिंह, हिन्दी प्राध्यापक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नागपुर प्रमुख वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

डॉ. बी.एस.ढिल्लन संस्थान के कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए।

सद्भावना दिवस: 20 अगस्त, 2015 को सद्भावना दिवस (राजीव गाँधी जन्म दिवस) मनाया गया।

आई. पी. आर. कार्यशाला : ''तकनीकी हस्तांतरण एवं वाणिज्यिकरण'' पर एक दिवसीय कार्यशाला: संस्थान के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मचारियों को आई. पी. आर. के विषय पर जानकारी में वृद्धि करने के लिए तथा तकनीकी हस्तांतरण के महत्व एवं इसके वाणिज्यिकरण के विषय को समझने हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 25 अगस्त, 2015 को किया गया। डॉ. सुधा मैसूरे, प्रधान वैज्ञानिक व विभाग प्रमुख (अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी) तथा पी. आई., क्षेत्रीय तकनीकी प्रबंधन केन्द्र, (जेड. टी. एम. सी.), दक्षिणी क्षेत्र भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूरू इस कार्यक्रम की आमंत्रिक वक्ता थी। डॉ. ए. डी. हुच्चे, नोडल अधिकारी, एन. ए. आई. एफ. इकाई के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर द्वारा आमंत्रित वक्ता का परिचय प्रस्तुत किया गया एवं भा. कृ. अनु. प. के आई. पीआर. निर्देशों के अनुसार वाणिज्यिकरण के द्वारा आई. पी. आर. निर्देशों के अनुसार वाणिज्यिकरण के द्वारा तकनीकी हस्तांतरण के महत्व को भी बताया।

डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, के. नी. फ. अनु. सं. नें वक्ता का स्वागत किया एवं इस प्रकार की कार्यशाला के आयोजन पर प्रकाश डाला जिसमें तकनीकी अन्वेषण करने वाले को जागृत एवं शिक्षित किया जा सके जिससे प्रौद्योगिकी को उपयोगकर्ता तक प्रभावकारी तरीके से पहुचाने को सुनिश्चित किया जा सके तथा इसके वाणिज्यिकरण के द्वारा संसाधन अर्जित किया जा सके। डॉ. सुधा मैसूरे नें अपने विस्तृत वक्तव्य में ''वाणिज्यिकरण के द्वारा तकनीकी हस्तांतरण'' पर आई. पी. आर. से संबंधित घटकों का खुलासा किया। डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग शास्त्र) ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. सुधा मैसूरे, प्रधान वैज्ञानिक व विभाग प्रमुख, कार्यशाला के दौरान सहभागियों को संबोधित करती हुई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान परिसर में आयोजित

के. नी. फ. अनु. सं. एवं टी. एम. सी. नें संयुक्त तौर पर 15 सितंबर, 2015 को नीबूवर्गीय फलों के नर्सरीधारकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का अयोजन किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम नीबूवर्गीय फल नर्सरीधारकों को रोग मुक्त रोप सामग्री को नवीनतम तकनीकी से बनाने के लिए आयोजित की गई। नये बगीचों में रोग मुक्त पौधे लगाने से बगीचे को न केवल रोग मुक्त रखा जा सकता है बल्कि उससे उत्कृष्ट उत्पादन भी प्राप्त किया जा सकता है। यह वक्तव्य डॉ. एम. एस. लदानिया, मिशन लीडर नीबूवर्गीय फलों हेतु विदर्भ, मराठवाड़ा एवं छिंदवाड़ा हुतु तकनीकी मिशन तथा निदेशक, भा. कृ. अनु. प. – के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर द्वारा दिया गया। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. आई. पी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक तथा डॉ. सी. एन. राव द्वारा किया गया। व्यक्तिगत तथा राज्य सरकार के रोप वाटिकाओं के लगभग 36 नीबूवर्गीय फल रोप वाटिकाकर्ताओं ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया।

अन्य परिसर मे आयोजित

प्रतापगढ़, राजस्थान के जनजातीय किसानों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम (टी. एस. पी. के अंतर्गत) का अयोजन 31 अगस्त, 2015 को अयोजित किया गया जिसमें 90 किसान सम्मिलित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्याख्यान, परिचर्चा एवं बगीचों के दौरे को सम्मिलित किया गया था। डॉ. ए. डी. हुच्चे, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी), डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग) एवं डॉ. वी. अनाव्रत, प्रधान वैज्ञानिक (विस्तार) ने प्रतापगढ़ के आस–पास स्थित बगीचों का सर्वेक्षण, के. वी. के. के अधिकारियों के साथ 1 सिंतबर, 2015 को किया।

डॉ. ए. डी हुच्चे, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) प्रशिक्षुओं को सम्बोधित करते हुए।

- कृषि जागृति सप्ताहः सासंद आर्दश ग्राम योजना के अंतर्गत, श्री नितिन गडकरी द्वारा चयनित ग्राम पॉचगांव (उमरेड़) में 1 से 7 जुलाई, 2015 के अंतर्गत कृषि जागृति सप्ताह का आयोजन कृषि विभाग, महाराष्ट्र द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, के. नी. फ. अ. सं., नागपुर नें किसानों को जैविक कृषि पद्तियों पर मार्गदर्शन प्रदान किया।

विशिष्ट आगंतुक

- डॉ. बी. एस. ढ़िल्लन, पूर्व अधिष्ठाता, स्नोतकोत्तर शिक्षा, पी. ए. यू., लुधियाना एवं डॉ. एस. के. शर्मा, निदेशक, भा. कृअ. प.–सी. आई. एच. बिकानेर ने के. नी. फ. अनु. सं. में स्थित प्रयोगशालाओं, प्रायोगिक प्रक्षेत्र एवं पौशाला का दौरा 28 सिंतबर, 2015 को किया।

अन्य प्रसार गतिविधियाँ

संस्थान का दौरा

- महाराष्ट्र राज्य से चार, गुजरात राज्य से 50 एवं मध्य प्रदेश से 344 किसानों ने संस्थान का दौरा इस तिमाही के दौरान किया।
- वानामती, नागपुर में प्रशिक्षण हेतु आये हुए 29 प्रशिक्षणार्थियों नें संस्थान का 1 सिंतबर, 2015 को दौरा किया।

सम्मान एवं मान्यता

- डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर को सम्मानिय अतिथि के रूप में आंमत्रित किया गया तथा इन्होनें ''महाराष्ट्र राज्य से संतरे का निर्यात'' के अंतर्गत सहभागियों की परिचर्चा बैठक में वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम का आयोजन अपेडा, निर्यात सुविधा केन्द्र, कारंजा (घाडगे), जिला अमरावती, महाराष्ट्र में 16 सिंतबर, 2015 को किया गया था।
- डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक, के. नी. फ. अनु. सं., नागपुर, हिन्दी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह, 14 सितंबर, 2015 में मुख्य अतिथि थे।

आयोजित बैठकें

- आई. एस. ओ. 9001:2008 की प्रथम बैठक का आयोजन 10 जुलाई, 2015 को किया गया। इसमें वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों द्वारा आई. एस. ओ. 9001:2008 हेतु उठाये जाने वाले महत्वपूर्ण कदमों के विषय पर चर्चा की गई जिसमें योजना एवं आई. एस. ओ. प्रमाण पत्र हेतु कार्य योजना सम्मिलित थी।
- **अनु. सलाहकार समिति की आर. ए. सी. बैठक :** संस्थान की अनुसंधान सलाकार समिति की 19वीं बैठक का अयोजन डॉ. एस. पी. घोष, पूर्व उपमहानिदेशक (बागवानी), भा. कृ. अ. प. की अध्यक्षता में 11 अगस्त, 2015 को संस्थान में की गई। इस अवसर पर सदस्य के रूप में डॉ. बी. एस. भूमान्नावर, प्रधान वैज्ञानिक (सेवामुक्त), एन.बी.ए.आई.आर., बैगलूरू, डॉ. बी. के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि प्रसार), सदस्य सी. ए.टी.ए.टी., आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली; डॉ. एम.एस. लदानिया सदस्य/निदेशक, के.नी.फ.अ.सं.; डॉ. टी. जानकीराम, सदस्य/सहायक महानिदेश (बागवानी), भा.कृ.अनु.प.; श्री सुनील एस. शिंदे, सदस्य/पूर्व विधायक एवं डॉ. ए. के. दास, सदस्य सचिव/ प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान) उपस्थित थे।

अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक

- **राजभाषा समिती बैठक:** राजभाषा समिती की तिमाही बैठक 8 जुलाई, 2015 को संस्थान मे आयोजन कि गयी।

मानव संसाधन विकास

• श्री सी.वी. बनकर, ए.सी.टी.ओ.: 'कृषि पुस्तकालय व्यावसायिकों का एन.ए.आर. एस. में क्षमता निर्माण ''पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, पी. जे.टी.एस.ए.यू., हैदराबाद 22–31 जुलाई, 2015 में सम्मिलित हुये। • डॉ. डी.के. घोष, प्रधान वैज्ञानिक (पादप रोग): ''फाइटोप्लाज्मा के त्वरित पहचान हेतु एल. ए.एम. पी. तकनीक'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, नांग लेम विश्वविद्यालय, वियतनाम में 3–12 अगस्त, 2015 में सम्मिलित हुये। • डॉ. सी.एन. राव, प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) एवं डॉ. ए.ए. मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी): ''प्रायोगिक आकडों का विश्लेषण'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, नार्म, हैदराबाद में 17–22 अगस्त, 2015 में सम्मिलित हुये। • श्री एस.एल.शिरखेडकर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी: ''भा.कृ.अनु.प. के तकनीकी अधिकारियों की कार्यनिर्वाह क्षमता का संवर्धन'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, एन.ए.ए. आर.एम., नार्म हैदराबाद में 19–28 अगस्त, 2015 में सम्मिलित हुये। • श्री वाय.वी. सोरटे, सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी: ''सरकारी खरीद हेतु प्रबंधन विकास कार्यक्रम'' पर प्रशिक्षण, एन.आई.एफ.एम., फरीदाबाद में 31 अगस्त से 5 सितंबर, 2015 को प्राप्त किया।

सुशासन/स्वच्छ भारत अभियान:

संस्थान में विद्युत खपत को कम करने के लिए कई स्थानोंपर ट्यूब लाईटों के स्थान पर एल. ई. डी. बल्ब लगाये गये।

कार्मिक

नियुक्तियाँ

- श्री दत्ता आर. सुरवासे, तकनीकी सहायक टी.एम.सी., के पद पर 24 जुलाई, 2015 से।
- श्री परेश जी. भोयर, वरिष्ठ अनुसंधान सहायक, के पद पर 24 जुलाई, 2015 से।
- श्रीमती शैला आर. बुटे, संगणक चालक, के पद पर 25 जुलाई, 2015 से।
- श्री लयंत एस. बोरकर, यंग प्रोफेशनल-II, के पद पर 7 अगस्त, 2015 से।
- डॉ. विजय टी. कोरे, यंग प्रोफेशनल-II, के पद पर 10 अगस्त, 2015 से।
- श्री प्रफुल्ल जलमकर, यंग प्रोफेशनल-II, के पद पर 10 अगस्त, 2015 से।
- श्री विशाल पी. फुले, यंग प्रोफेशनल-II, के पद पर 20 अगस्त, 2015 से।
- श्रीमती सरोज आर. देशमुख, वरिष्ठ अनुसंधान सहायक, के पद पर 21 अगस्त, 2015 से।
- सुश्री हीना आफरीन, प्रक्षेत्र सहायक, के पद पर 7 सितंबर, 2015 से।
- श्री विनोद जी. माटे, प्रक्षेत्र सहायक, के पद पर 10 सितंबर, 2015 से।
- श्री प्रशांत एच. समरीत, प्रकल्प सहायक, के पद पर 15 सितंबर, 2015 से।

कार्यमुक्ति

- श्रीमती सरोज आर. देशमुख, प्रक्षेत्र सहायक, 20 अगस्त, 2015 से कार्यमुक्त।

सुझाव /प्रतिसूचना

भारतीय कृषि के लिए मानसून की वर्षा ही जीवन रेखा है अतएव विभिन्न फसलों अथवा नीबूवर्गीय फलों के उत्पादकों के लिए भी यह अपवाद नहीं है। जून से सितंबर माह के अंतर्गत मानसून की कुल वर्षा एवं इसका वितरण नागपुरी संतरे, मौसंबी एंव नीबू में पुष्पन निर्धारित करता है। जून से सितंबर मानसून 2015 में राष्ट्रीय औसत वर्षा की तुलना में 14 प्रतिशत की कमी थी। उत्तरी–पश्चिमी भारत में यह कमी 17 प्रतिशत, दक्षिणी प्रायद्वीप एवं पूर्वी तथा पूर्वोत्तर भारत में यह क्रमशः 16, 15 एवं 8 प्रतिशत थी। इस काल के दौरान वर्षा का वितरण असामान्य एवं वर्षा के दिनों की संख्या कम थी। जून, जुलाई, अगस्त एवं सितंबर के अतंर्गत भारी वर्षा केवल चार से सात दिनों तक ही थी एवं शेष दिन लगभग शुष्क थे। इसके परिणामस्वरूप तापमान में वृद्धि हुई जिससे फल अधिक झड़े तथा अगस्त से सितंबर के बीच असामान्य माइट्स कीट की संक्रमण देखी गई। इस प्रकार अकल्पित जलवायु परिवर्तन घटनाओं से कीटनाशक छिड़कावों में अत्यधिक वृद्धि के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि हुई। इस प्रकार की अवस्था के कारण सिंचाई में वृद्धि से अधिक उर्जा की आवश्यकता एवं खपत हुई। सामान्य वर्षा से फसल सिंचाई का काम सरलता से हो सकता था।

सम्पादनकर्ता : डॉ. एम.एस. लदानिया, निदेशक; डॉ. आर. के. सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी); डॉ. आशुतोष मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी) एवं डॉ. अशोक कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (पौधारोग विज्ञान)
प्रकाशक : डॉ. एम.एस. लदानिया, निदेशक, सी.सी.आर.आय., नागपुर – 440033, महाराष्ट्र
नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र, केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान का अधिकारिक समाचार पत्र है
डाक पता : पो.बाक्स न. 464, शंकर नगर, पोस्ट ऑफिस, अमरावती रोड़, नागपुर–440010 (महाराष्ट्र)
फोन न. : 0712–2500249, 2500615, 2400813 **फैक्स :** 0712–2500813
वेबसाइट: www.ccringp.org.in **ईमेल** :citrus8_ngp@sancharnet.in, director.ccri@icar.gov.in, dirnrccngp@gmail.com
मुद्रित : एस्केस् स्केना ग्राफिक, गुजरवाड़ी, नागपुर